

Rs. 5/-



Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 12, August 2012





Readers' Club Bulletin पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 12, August 2012

वर्ष 16, अंक 12, अगस्त 2012

Editor / संपादक

Manas Ranjan Mahapatra

मानस रंजन महापात्र

Assistant Editor / सहायक संपादक

Dwijendra Kumar

द्विजेन्द्र कुमार

Production / उत्पादन

Narender Kumar

नरेन्द्र कुमार

Illustration / चित्रांकन

Arup Gupta

अरूप गुप्ता

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typeset at Deft Creations H-44, Second Floor, South Extension Part- 1, New Delhi-110049

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Okhla Ind. Area, Ph-I, New Delhi.

Contents/सूची

जादूगर प्रोफेसर	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे	2
जादुई मछली	डॉ. उषा शर्मा	6
Applying The Brain	Nishima Yashpal	9
The Godavari	Al Valliappa	11
एक गड़ेरिया था	संगीता सेठी	15
Petra- The Wonderful	Radha Kant Bharati	17
क्या मैंने सही किया?	सुरेखा पाणंदीकर	19
My Visit To Nainital	Shikhar Bhatnagar	23
Golden Tree	Perna Sood	26
Greatness of the Great	Prabir Kumar Pal	27
लौट के बुद्धू घर को आए	भगवत प्रसाद पान्डेय	28
मोनू का बुखार छूमंतर	सलसबील बानो	30
ओलंपिक	डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा	32

Editorial Address/ संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070

E-Mail (ई-मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

Storytelling and Dance-Drama at Book Fair



Around 400 children drawn from various schools across the national capital region joined in the feast of stories, and learnt the art of presenting a story through dance and drama in the children's activities held at Ghalib Academy, New Delhi. The occasion was a 3-day book exhibition organized by National Book Trust, India in collaboration with Delhi Police at Urs Mahal in Nizamuddin, New Delhi from 17-19 July 2012.

The children's activities began with a storytelling session on 18 July, the second day of the exhibition, in which two young storytellers went on a storytelling spree. This heart-warming session was conducted by Ms Charu Sethi and Ms Pawan Guleria. Children too grabbed the opportunity and stunned the audience with their enchanting tales. Over 150 children participated in the event.

Conducted by Ms Banani Sarkar, a Bharatnatyam exponent, the workshop on 'Presenting a Story through Dance and Drama' saw children enacting scenes from Rabindra Nath Tagore's masterpiece *The Post Office*, originally written in Bangla. Children who participated in

the workshop belonged to MCD Primary Schools, MCD Pratibha Vidyalaya, Delhi Public School, Vasundhara, Ghaziabad, The Shri Ram School, Gurgaon and those associated with NGOs such as Agha Khan Foundation, Sakshi etc.

School and college students from Nizamuddin and nearby areas also thronged the book exhibition in large numbers.

The book exhibition was organized as part of community policing initiative of the Delhi Police for which it collaborated with the National Book Trust. In addition to the NBT, the book exhibition showcased publications of a number of reputed publishers such as Sahitya Akademi, National Bal Bhawan, National Council for Promotion of Urdu Language, Gandhi Peace Foundation, Ghalib Akademy, Agha Khan Foundation etc.

The book exhibition was inaugurated by Shri Niraj Kumar, the new Commissioner of Police, Delhi on 17 July in the presence of Shri Sandeep Dixit (MP), MA Sikandar, Director, NBT and a number of senior police officers



जादूगर प्रोफेसर

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे



पिछले अंक में आपने पढ़ा कि मंगल ग्रह पर प्रोफेसर और बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार होता है। खासकर सेनापति मैकोलो तो उनके साथ ही होते हैं। आगे क्या होता है जानने के लिए यह अंक प्रस्तुत है।

प्रोफेसर और बच्चे एक अच्छे होटल में बैठे थे। सेनापति मैकोलो उन्हें मंगलग्रह के तरह-तरह के भोजन खिला रहे थे। अजीबो-गरीब मिठाइयां, शरबत, सब्जियां-पृथ्वी से सब कुछ भिन्न था यहां।

“आप लोग इस ग्रह की ऊपरी सतह पर क्यों नहीं रहते?” शशि के इस प्रश्न पर सेनापति मैकोलो हंसने लगे।

“मैं जानता था कि तुम लोग यह प्रश्न जरूर पूछोगे।”

“हां! हमारे वैज्ञानिकों ने आपके ग्रह के बारे में जो जानकारी इकट्टी की है, वह बिल्कुल भिन्न है। वैसे लोगों ने यह दावा किया है कि आपकी ऊपरी सतह पर कभी बस्तियां अवश्य होंगी। लेकिन यह अनुमान ही था। आमतौर पर इसे हम एक गर्म ग्रह मानते हैं।” प्रोफेसर डेविड ने कहा।

“आपका अनुमान सही था और आपने कुछ पुराने खंडहर शायद देखे भी होंगे। दरअसल पहले हमारे ग्रह की सारी बस्तियां ऊपर ही थीं, लेकिन धीरे-धीरे यहां का मौसम बदलने लगा। ऊपरी सतह गर्म होकर इतनी खराब हो गई है कि उस पर रहना कठिन हो गया। तब हमने पृथ्वी के अंदर बड़ी-बड़ी सुरंगें बनाकर अंदर ही अंदर बस्तियां बसाईं।” सेनापति मैकोलो ने कहा।

“आपका यहां दम नहीं घुटता?” संजय ने पूछा तो मैकोलो हंसते हुए बोले— “नहीं तो! क्या तुम्हारा दम घुट रहा है?”

“नहीं।” संजय ने कहा।

“और तुम धरती के अंदर बैठे हो।” सेनापति ने हंसकर कहा, “दरअसल यहां जीने के लिए जैसी गैस चाहिए, वह हमारे ग्रह की ऊपरी सतह पर नहीं है। वायुमंडल में ही खत्म हो गई है वह गैस। हमारे वैज्ञानिकों ने इस खतरे के बारे में सौ साल पहले ही घोषणा कर दी थी। बस तभी से धरती के अंदर बस्तियां बनाने का काम शुरू हुआ था। साथ ही हमने उस गैस का उत्पादन भी शुरू किया जो जीवित रहने के लिए आवश्यक है। यहां की हर बस्ती में चौबीसों घंटे उस गैस से ही सारा वातावरण तैयार किया जाता है, जिससे किसी को सांस लेने में कठिनाई न हो। अगर कुछ देर के लिए भी यह काम रुक गया तो सबका दम घुट जाएगा। पर इसके लिए कई प्लांट सदा तैयार रहते हैं, जो बारी-बारी से चलाए जाते हैं।

“क्या आप हमें यहां के वैज्ञानिक केन्द्र दिखाएंगे?” राजू ने पूछा।

“नहीं। सुरक्षा की दृष्टि से यह संभव नहीं है। हम ऐसा मानते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में विज्ञान की दृष्टि से सबसे ज्यादा उन्नत हम ही हैं, शुक्र, शनि और बृहस्पति भी अभी बहुत पीछे हैं हमसे।”

“यह बात आप कैसे कह सकते हैं?” प्रोफेसर ने पूछा।

“हमारे यान इन सभी ग्रहों में जाते रहते हैं और इनके बारे में जानकारी लेते हैं।” सेनापति की इस बात से स्पष्ट था कि उनके यान जासूसी के उद्देश्य से इधर-उधर जाते रहते हैं।

कुछ देर की बातचीत के बाद वे लोग मंगल ग्रह की बस्ती देखने के लिए चले। बड़ी-बड़ी सुरंगों के अंदर इतनी सुंदरता से घर की और सभी तरह की सुविधाओं का निर्माण किया गया था कि ये लोग आश्चर्यचकित हो रहे थे। वहां सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध थीं— बाजार, स्कूल, अस्पताल, पानी, बिजली आदि सब कुछ।

“यह एक ही बस्ती है या ऐसी कई और भी हैं?” विक्की ने पूछा।

“ऐसी बहुत-सी बस्तियां हैं। यह यहां की राजधानी है।” सेनापति ने कहा।

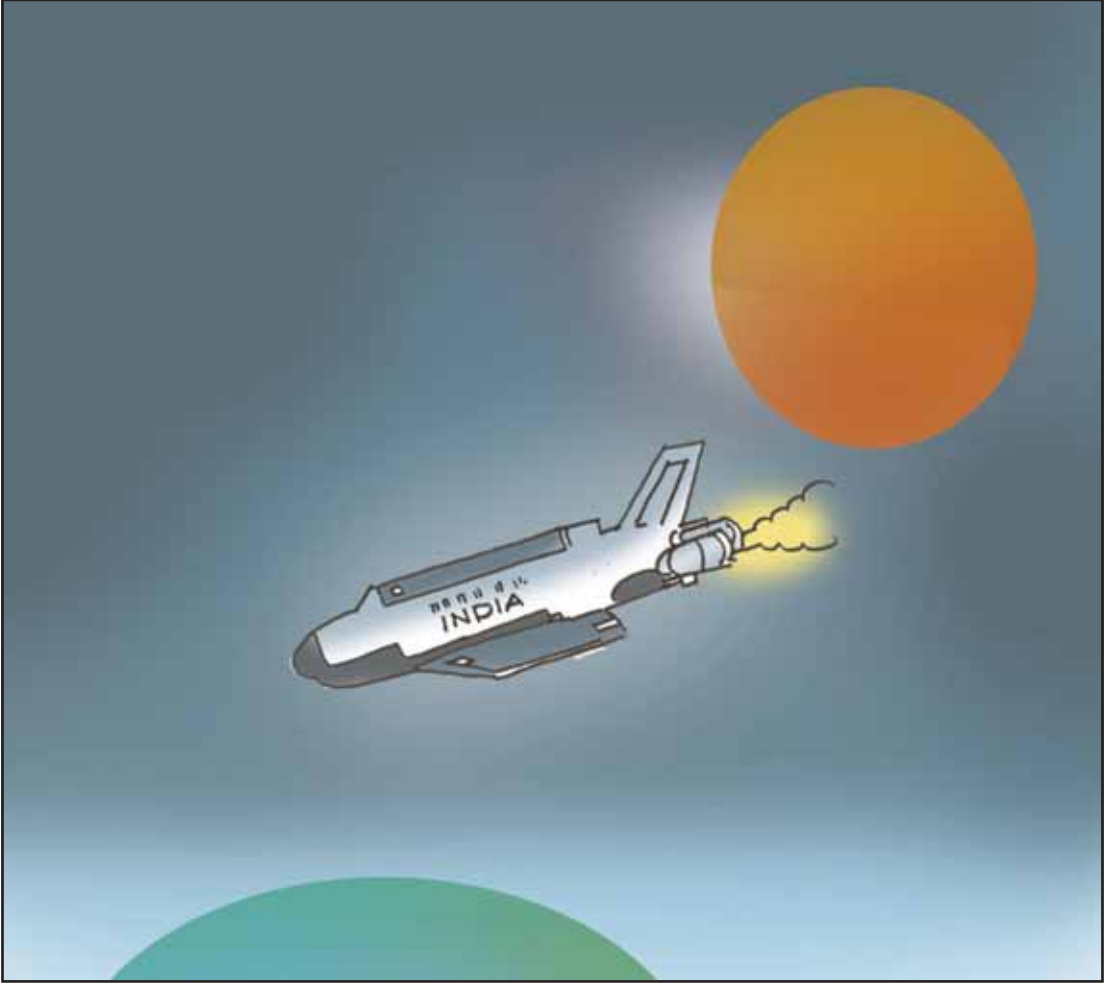
उस बस्ती में काफी समय बिताने के बाद जब प्रोफेसर डेविड ने कुछ तकनीकी बातों की चर्चा की तो सेनापति टाल गया। उसने कहा— “इस विषय में तो हमारे वैज्ञानिक ही कुछ बता सकते हैं, पर आप लोग उनसे नहीं मिल सकेंगे।”

“क्यों?”

“हमारे सर्वोच्च नेता का ऐसा ही आदेश है।”

“क्या इस ग्रह पर उनका ही शासन है?” डब्लू ने पूछा।

“हां! उनका ही आदेश है कि हम कोई जानकारी किसी को भी न दें, और न ही किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने दें।”



“इतने देर में आपने उनसे भी संपर्क कर लिया?”

“जब आपका विमान हमने अपने ग्रह पर उतारा था उससे पहले ही हमने सारे आदेश प्राप्त कर लिए थे। सेनापति के यह कहने पर शशि ने तपाक से प्रश्न पूछ डाला— “ आपने अंतरिक्ष में घूम रहे हमारे विमान को अपने यहां कैसे खींच लिया?”

हमने अपने ग्रह के चारों ओर के अंतरिक्ष में ऐसी चुंबकीय शक्ति फैला रखी है कि

उससे बचकर कोई भी यान नहीं जा सकता। इन चुंबकीय तरंगों में फंसने के बाद हम निर्णय करते हैं कि इस यान को अपने ग्रह पर उतारें या नष्ट कर दें। हमें लगा था कि आपका यान जान-बूझकर नहीं आया, इसलिए इसे नष्ट नहीं किया गया और उतार लिया गया। किसी यान को उतारने के लिए हमारे अंतरिक्ष केंद्र में विशेष व्यवस्था है।” सेनापति ने समझाया।

“अरे, हम तो शायद फिर से अंतरिक्ष केंद्र पर पहुंच गए हैं?” राजू ने कहा।

“हां! दरअसल अब आपको यहां से वापस जाना है।” सेनापति ने कहा।

“इतनी जल्दी?” शशि के मुंह से अचानक ये शब्द निकल गए।

“हां। आप लोगों को अधिक देर तक यहां रोकने के आदेश नहीं है।” सेनापति ने कहा— “आपका यान तैयार है। आप लोगों को अपनी वापसी यात्रा आरंभ करनी है।”

बच्चों को लगा कि यह उनका अपमान है। मंगलवासियों के रुखे व्यवहार के कारण उन्हें आश्चर्य हो रहा था। किंतु प्रोफेसर डेविड ने उन्हें समझाया : “तुम लोगों ने जो कुछ भी देखा और जाना है, वह कुछ कम नहीं है। हर ग्रह के अपने नियम होंगे। इसलिए बुरा नहीं मानो। चलो, अब हम वापस चलें।”

सेनापति के साथ वे सब जिस यान में घूम रहे थे, वह अंतरिक्ष केंद्र पर रुक गया। सभी लोग यान के बाहर आए। उनका यान तैयार था। सेनापति मैकोलो ने उन्हें प्यार से विदा किया। उसने कहा— “मैं चाहता था कि बच्चों को इस ग्रह की प्यारी-प्यारी चीजें और कुछ विशेष स्थान दिखाऊं, लेकिन आदेशों से विवश हूं।” उसकी बात से लगा कि वह दिल का अच्छा है। चलते समय उसने कहा— “पृथ्वीवासियों के प्रति दरअसल हमारे ग्रह में आदर की भावना कम है।” फिर वह अचानक चुप हो गया। जैसे उसने कोई भेद

की बात कह दी हो। पर प्रोफेसर डेविड ने इसका अर्थ समझ लिया था।

दरअसल मंगल ग्रह की जासूस उड़न तश्तरियों का रहस्य जानने के लिए पृथ्वीवासियों के प्रयत्नों से ही, मंगलवासी चीढ़ गए होंगे। पर इस चीढ़ का कोई आधार न था। क्योंकि हर ग्रह अपने यहां जासूसी करने वाले का विरोध तो करेगा ही। वे यही सब सोचते हुए अपने यान पर पहुंच गए। बच्चे भी उनके साथ यान में बैठ गए। सेनापति ने नियंत्रक को संदेश भेजा कि यान को जाने का रास्ता दे दो। फिर दूसरे संकेत पर प्रोफेसर ने यान चालू किया और वे सुरंग से होते हुए यान को बाहर ले आए। सुरंग से बाहर निकलते ही उनका यान पूरी गति से अंतरिक्ष के लिए रवाना हो गया। इस दौरान उन्हें बराबर निर्देश मिल रहे थे, जो इस बात का संकेत थे कि वे ठीक दिशा में जा रहे हैं।

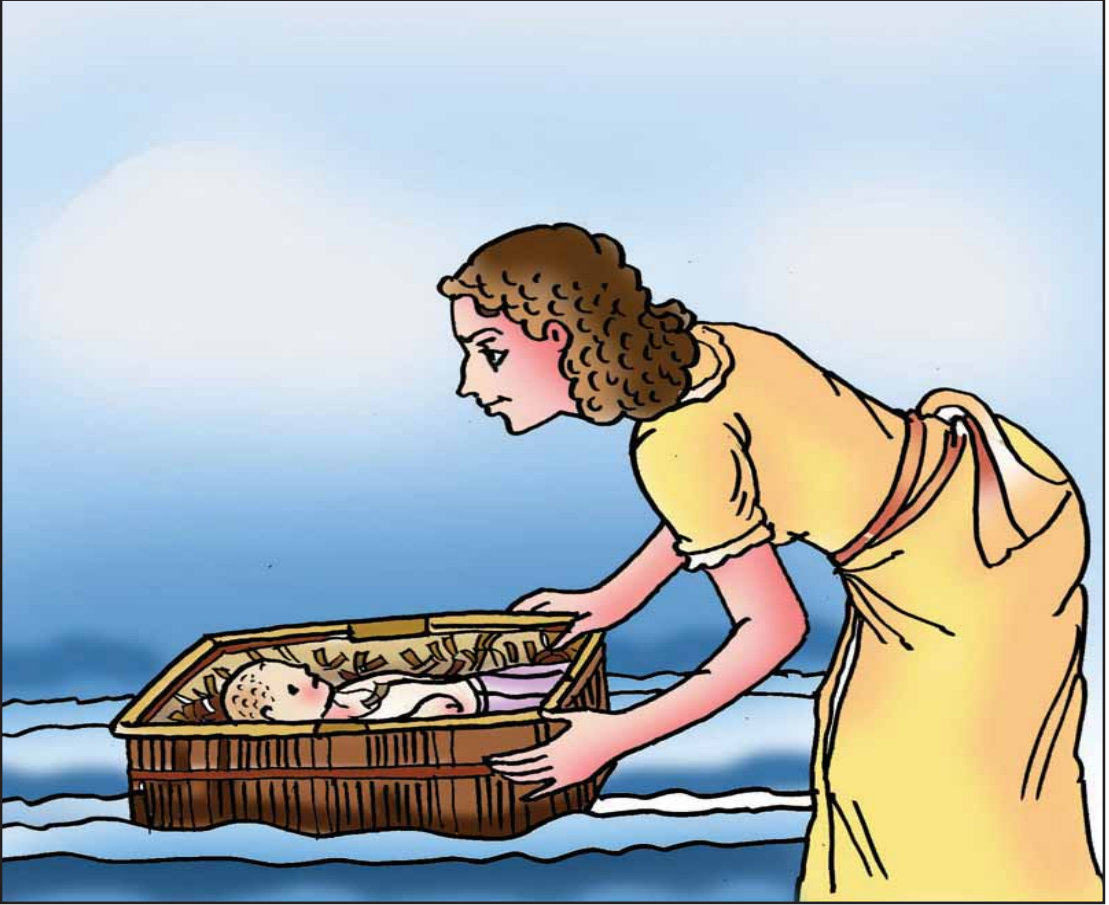
काफी दूर निकल आने के बाद झटके से यान ऊपर उठने लगा और सामान्य गति से चलने लगा। प्रोफेसर ने कहा— “अब हम मंगल ग्रह के अंतरिक्ष की चुंबकीय शक्ति से बाहर आ गए हैं।” सबने राहत की सांस ली।

(मंगल ग्रह से निकल जाने के बाद यान और उस यान में बैठे प्रोफेसर और बच्चों के साथ क्या होता है, जानने के लिए हमारे अगले अंक की प्रतीक्षा करें।)

102, एच.आई.जी., ब्रजविहार
पो. चंद्रनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

जादुई मछली

डॉ. उषा शर्मा



काफी समय पहले की बात है। पौलेनेशिया के एक द्वीप में तरंगा नाम की एक स्त्री रहती थी। उसने वहीं के निवासी एक देवता से विवाह किया था। वह विवाह करके बहुत खुश थी और बहुत सुखी थी। उसके चार बेटे थे जो बहुत शक्तिशाली और लंबे-चौड़े थे। लेकिन बाद में उसे एक और पुत्र हुआ जिसका नाम था माऊइ।

लेकिन माऊइ के जन्म से तरंगा बहुत दुखी हुई क्योंकि वह दूसरे भाइयों की तुलना में बेहद कमजोर था। उस जमाने में बीमार बच्चे को घर के बाहर उसके किस्मत पर छोड़ दिया जाता था। तरंगा अपने छोटे बच्चे को बहुत प्यार करती थी। वह किसी तरह उसे बचाने का उपाय सोचने लगी।

एक रात जब घर में सभी सो रहे थे, वह धीरे से घर के बाहर निकली और समुद्र तट तक गयी। वहां उसे हड्डी का एक टुकड़ा मिला जिस पर उसने माऊइ लिखा और धागे से बच्चे के गले में बांध दिया। फिर बच्चे को चूमा और लकड़ी के बक्से में रखकर समुद्र में बहा दिया— 'तुम्हारा रक्षक ईश्वर होगा'। यह कहकर रोते-रोते वह वापस अपने महल में आ गयी। लेकिन यह क्या! उसका पति उसे छोड़कर जा चुका था क्योंकि तरंगा ने महल के नियम को तोड़ा था।

उधर वह बक्सा जिसमें माऊइ को तरंगा ने रखा था, बहते-बहते समुद्र तट से आ लगा। उसे एक बुद्धिमान मछुआरे तमा ने देखा और बच्चे को उठाकर अपने घर ले आया। उसे लगा कि निश्चय ही यह कोई विशेष बालक है। वह उसका पालन पोषण करने लगा।

धीरे-धीरे कमजोर सा दुबला-पतला माऊइ एक शक्तिशाली और बलिष्ठ युवक बन गया। तमा ने उसे सब कुछ सिखाया, जितना वह सीख सकता था। उसने माऊइ को मछली पकड़ने, पशु-पक्षियों की भाषा समझने और यहां तक कि दूसरे लोग क्या सोच रहे हैं, इसको जानने में भी उसे निपुण बना दिया।

एक दिन तमा ने बालक से कहा— 'देखो, अब तुम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते

हो। इसलिए अब समय आ गया है कि तुम अपने घर जाओ और घरवालों के साथ रहो।' बालक दुखी हुआ। लेकिन उसने तमा की आज्ञा का पालन किया। उसने बूढ़े का हाथ चूमा और निकल पड़ा। जल्दी ही वह वहां पहुंच गया जहां उसका घर था। उसकी मां ने उसके गले में पड़े हुए हड्डी के टुकड़े को पहचान लिया। अपने बेटे को अपने सामने देखकर वह खुशी से रौने लगी। उसने माऊइ को बहुत प्यार किया— 'भगवान ने ही तुम्हें मेरे पास भेजा है', यह कहकर उसने माऊइ का हाथ पकड़ा और घर के अंदर ले आयी।

लेकिन माऊइ के चारों भाई उसे देखकर बिल्कुल खुश नहीं हुए। उन्हें इस बात पर ईर्ष्या थी कि मां छोटे बेटे को अधिक प्यार करती है। उन्होंने सोचा, क्यों न ऐसा कुछ किया जाए कि मां यह समझे कि माऊइ आलसी और बेकार लड़का है। वे योजना बनाने लगे और अंत में इस निर्णय पर पहुंचे कि सुबह-सुबह जब वे मछली पकड़ने जायेंगे तो माऊइ को घर पर ही छोड़ देंगे। तब मां को पता चल जायेगा कि वह कितना आलसी है। पर माऊइ को पता चल गया कि उसके भाई क्या सोच रहे हैं और उसने भी अपनी योजना बना ली।

दूसरे दिन वह भाइयों से भी पहले उठा और समुद्र तट पर पहुंच गया। वहां

वह अपने भाइयों की नाव पर मछली पकड़ने वाली जाल में छिप कर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसके भाई वहां आए और नाव में बैठकर मछली पकड़ने चल पड़े। चारों भाई आपस में बात करने लगे। उनमें से एक ने कहा— 'माऊइ अभी भी सो रहा होगा। अब मां को पता चल जाएगा कि वह आलसी है।' सब हंसने लगे। लेकिन यह क्या? माऊइ जाल के बाहर निकल आया। चारों भाई हैरानी में पड़ गए और नाराज होने लगे। घंटों बीत गए लेकिन एक भी मछली हाथ न आयी। तभी माऊइ ने एक ओर इशारा किया और बोला 'वहां मैं मछली पकड़ लूंगा।' उसके भाई आनाकानी करने लगे लेकिन दूसरा कोई चारा भी नहीं था इसलिए वे आगे बढ़ गए और बोले— 'हां, हां तुम बहुत होशियार हो ना, अब मछली पकड़कर दिखाओ।' सभी भाई गुस्से में थे।

माऊइ मुस्कुराया और मछली के कांटे को पानी में डाला। थोड़ी देर तक कुछ नहीं हुआ तो उसके भाई उस पर हंसने लगे— 'क्यों क्या हुआ? हमें पता चल गया है कि तुम्हें मछली पकड़ना नहीं आता। तुम मूर्ख हो।' वे हंस रहे थे कि तभी कांटा हिलने लगा।

'इसे ऊपर उठाने में मेरी सहायता करो।' माऊइ ने भाइयों से कहा।

पांचों भाई उसे खींचने लगे। लेकिन जाल इतना भारी था कि घंटों वे उसे खींचते रहे। वे सोच रहे थे कि जरूर आज कोई बहुत बड़ी मछली फंस गयी है। लेकिन तभी एक भाई सहसा चिल्ला पड़ा— 'अरे देखो, देखो। ये एक द्वीप है। माऊइ ने मछली के आकार का द्वीप पकड़ा है।'

सचमुच ही वह एक बड़ा द्वीप था जो समुद्र के ऊपर तैरता लगभग मछली के समान दिख रहा था। सारे भाई उस द्वीप पर कूद पड़े। 'यहां मैं रहूंगा' एक भाई चिल्लाया। दूसरा बोला— 'नहीं मैं रहूंगा।' और देखते ही देखते चारों भाई आपस में झगड़ने लगे। अचानक जोर की आवाज हुई और तेज धमाके के साथ द्वीप दो टुकड़ों में बंट गया। चारों भाई डर गये और डर के मारे कूद कर अपनी नाव पर बैठकर घर चले गये। माऊइ ने यह देखा और मुस्कुरा दिया। अब यह नयी जमीन उसकी थी। वहां वह राजा था और लोग उसकी प्रजा। वह द्वीप न्यूजीलैंड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अगर आज भी नक्शे में न्यूजीलैंड को देखें तो यह द्वीप दो हिस्सों में बंटा मछली के आकार का लगता है जिसे माऊइ ने ढूंढा था।

Applying The Brain

Nishima Yashpal



There lived four friends in a small village on the banks of river Vyas. Three of the friends were experts in different branches of knowledge. But they lacked practical wisdom. The fourth friend however, was not expert in any branch of knowledge. But he was wise and intelligent. His name was Suri.

One day, the four friends discussed among themselves, "Let's go to the town and earn wealth. No one in this village appreciates our knowledge and expertise."

Having made the decision, the four friends packed their bags, took some snacks and left their village.

As they were walking along, one of the friends said, "What is the use of our brains if one cannot achieve expertise in any branch of knowledge. Three of us are experts in various fields of knowledge, so we will easily earn wealth,

but what about Suri? He does not possess any knowledge. He will not earn anything. In fact, he will be a burden on us."

The second friend said, "Yes! I agree with you. Let's ask Suri to return to the village. This will save us from sharing our hard-earned wealth with him. The third friend said, "We all have grown up together. He may not be an expert in any branch of knowledge, but he is certainly our friend. Let him accompany us. I think he has right to share our wealth. The two other friends agreed, rather unwillingly.

Soon the four friends entered a thick forest. As they walked a little further, they saw the bones of an animal lying scattered in front of them! One of the friends was pleased to see the sight. "Let's put our knowledge to test," he said and added, "I know a mantra that can join the scattered bones. I will now chant the mantra."

Saying this, he chanted a mantra. And lo! There was a miracle! All the bones joined together, each in its place.

And what did the four friends see before them? A skeleton of a Lion!

Now the second friend said, "I know a mantra that can cover a skeleton with flesh and skin. Saying this, he chanted a

mantra. And lo! There was another miracle!

Veins were formed on the skeleton and blood began to flow in them. Soon the skeleton got covered with flesh and skin!

And the four friends saw a dead lion before them!

The third friend said, "I possess the knowledge which can bring the dead back to life. If I chant a mantra, this animal will be alive in few minutes. Let me chant the mantra.

"Don't be foolish," said Suri. "You should not bring a lion back to life. But the third friend refused to listen to him. Pointing to the other two friends, he said, "Both of them have tested their mantras. Now let me also test my knowledge. I insist on chanting the mantra."

Suri understood that his foolish friend would not pay heed to his advice. He then tried to convince the other two friends. But they were adamant: "When the lion comes back to life, he will not kill us. In fact, he will thank us."

Suri ran fast and climbed up a tree. He sat on a branch and watched his friends from there.

The third friend chanted a mantra. And lo! There was yet another miracle!



The lion came back to life! He roared and pounced on one of the friends. He then killed the other two also. In this way, the three friends lost their lives.

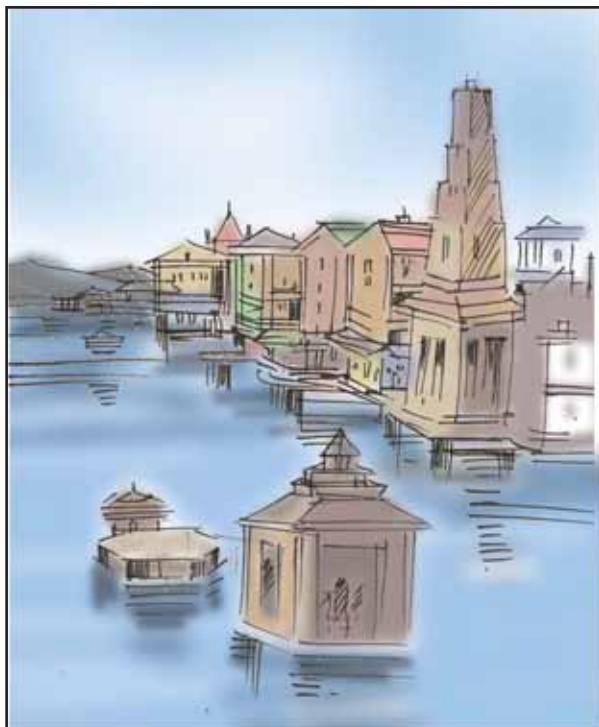
The lion feasted on the three friends. When his hunger was satisfied, he walked away quietly.

Suri climbed down the tree and quickly ran towards his village.

*4/9, Cassia Road, Shipra Suncity
Indirapuram, Ghaziabad (U.P.)*

The Godavari

Al Valliappa



Most of the rivers of the south flow from west to east. They are born in the ranges of the Western Ghats and flow towards the Bay of Bengal. The Kaveri is born in the Brahmagiri range of the Ghats. The Godavari, the longest of the east-flowing rivers of the south, has its source spring further north in the Ghats. Like the Kaveri, the Godavari which is almost twice its length is born within sight of the Arabian Sea and flows east into the Bay of Bengal.

The Godavari is popularly referred to as Dakshina Ganga or the Southern

Ganges and is considered one of the sacred rivers of India because it is associated with the story of the Ramayana. Every bend in the river, every crag and boulder has its tale to tell of the part it played, however small, in the great story of king Rama. Innumerable towns, woods and villages on its banks claim that Rama, his brother Lakshmana, and his wife Sita either passed through or lived here for a time.

Take Panchavati for example. It is a place near Nasik. People believe that this is the same Panchavati mentioned in Valmiki's Ramayana where Rama stayed with Lakshmana and Sita for a while after leaving Ayodhya. It was at this place, they believe, that Lakshmana cut off the nose of Surpanakha, the sister of King Ravana of Lanka. She had come to have a glimpse of Rama, the handsome heir-apparent of Ayodhya, and had fallen in love with him. The story goes that she was so bold in her advances that Lakshmana, angered beyond control, cut off her nose, as punishment.

It was here in the Godavari that Rama and Lakshmana are supposed to have taken their ritual bath on hearing of the death of their father, king Dasaratha. Among the Hindus, it is the custom to

bathe and clean oneself when a close relative passes away. It was in this same Godavari near Nasik that Gandhiji took his ritual bath when he came home from England and learnt of the death of his mother.

Just like the Kaveri, the Godavari goes on collecting tributaries as it flows along. The first to join it is the Pranahita which has its source in Maharashtra. Later, the Indravati and the Sabari (another name associated with the story of Rama) join the Godavari. With so many rivers, large and small, joining it, the Godavari becomes full four kilometers wide. The river does not, however, maintain this width throughout its course. As it flows to the Eastern Ghats, in some places it is thin and narrow. Then, as the Godavari reaches Rajahmundry it again becomes a broad and mighty river. The railway bridge across the Godavari at Rajahmundry gives an indication of the tremendous size of the river here. This bridge said to be the second largest in the whole of India is made up of 56 spans!

The big sprawling town of Rajahmundry has a great tradition and history. It has seen the rise and fall of distinguished dynasties. Its Pushkaram Festival which is held once in 12 years is as famous and collects as big crowd as the Kumbha mela of Prayag and the Mahamakham of Kumbakonam. The temple here on the banks of the Godavari dedicated to Markandeya and

Kotilingesvara, an unusual choice of deities, have a special appeal to devotees. Rajahmundry has been the home of a long line of distinguished poets, essayists, novelists and dramatists. Nannaya, famous classical poet of the 11th century and Veeresalingam Pantulu, the fore-runner of modern Telugu prose, were born and lived here. It is still an important centre of literary activity.

Before we reach Rajahmundry, we pass another town associated with Rama which stands on the banks of the Godavari. This is Bhadrachalam.

Bhadrachalam is even more famous as the town of Ramdas, the great devotee of Rama, whose songs are as well-known all over the country as those of Kabir and Meera. The story of Ramdas is a true story. Ramdas does not belong to legend, he belongs to history.. Ramdas was not his real name, his name was Gopanna and he was a Tahsildar.

The story goes that an old woman of this town named Thimmakka dreamt one night of three idols in a forest on a hilltop. The dream was so vivid that in the morning she went to the hill accompanied by her daughter and, hacking her way through bushes and brambles, at last found the idols of Rama, Sita and Lakshmana exactly where she had seen them in her dream. With joy and devotion she cleared the place as well as she could and put a



thatched roof over the idols to protect them from sun and rain. And every day the old woman climbed the hill to offer prayers at the shrine. Soon the people of the village began to talk about her and her mysterious visits to the hill. What she was up to, they wondered. When people asked her what on earth she did on the hill, she answered that she went to visit the temple every day- an answer which only made them laugh because the whole hill was covered with thick jungle. How could be a temple there?

Soon the stories about Thimmakka and her gabbling about the temple reached the ears of the Tahsildar Gopanna. He took the old woman's stories seriously enough to go up Thimmakka's temple where she had said it was-- three idols under a thatched roof built in a clearing in the forest and kept spotlessly clean. As Gopanna gazed at

those idols, a great change seemed to come over him. He could not take his eyes away from the idols and his whole body trembled with joy that he had never known before. It seemed to him that all his life had been but a journey towards this moment on hilltop.

Gopanna settled down on the hill and built a stone temple for the idols. As he worshipped at this little temple, poetry and song

poured from his lips and soon the people of Bhadrachalam were hacking their way through the forest to see Gopanna and his temple. This named him Bhadrachala Ramdas, a name familiar through the length and breath of Andhra Pradesh.

The old village of Bhadrachalam has now grown into a popular town. Even the hilltop has changed. On the hill now stand 24 temples with the stone temple built by Ramdas housing the idols discovered by Thimmakka right in the middle of the cluster. To reach these temples, we have to cross the river Godavari in a motor boat and go through forest.

Formerly the water of the Godavari River was not fully used and much of it flowed into the sea. There were frequent famines in the land. Sir Arthur Cotton, a British official, suggested that if a dam

could be built across the river at Dhavaleshwaram, a canal system could be planned and river could be prevented. Thanks to his efforts, in 1845 construction of a masonry dam across the river was begun. It was completed in two years. Three large canals were also dug. Because of these the Godavari district became one of the most fertile in the country.

Sir Arthur Cotton is remembered with the gratitude by the people of south India. He came to India from England when he was a mere lad of seventeen. He was working in the Irrigation Department. When he saw the old dam (the Stone Anicut) which the Chola kings had built across the river Kaveri, he was very impressed. He repaired and improved it to provide more irrigation facilities for the lands on either side of Kaveri. He was also responsible for the planning and construction of the other big dam across the Kaveri which is called Melanai meaning the Upper Anicut.

It is this same Sir Arhur who was responsible for the building of a dam across the Krishna river near Vijayawada. He not only built the dam but also planned a canal system to feed the lakes and tanks which were used for irrigation.

The dam across the Godavari at Dhavaleshwaram has been of great benefit to the people of that area for the past 120 years and more. But it is beginning to show signs of age.

Past Dhavaleshwaram, the Godavari divides into two rivers. The eastern one is called Gautami Godavari and the one flowing the west, the Vasistha Godavari. There is also third distributary in the middle called the Vaishnava Godavari. These three branches are responsible for a delta area being formed just before they flow into the sea. The Gautami Godavari meets the sea at Yenam; the Vasistha Godavari at Narsaput and the Vaishnava Godavari at Nagara.

Delta areas formed where rivers meet the sea are invariably rich and fertile. There is great competition for land in such regions. The Godavari delta once attracted the Dutch, the French and the English. All these people settled here and established business houses and companies. The area now known as Yenam where the Gautami Godavari meets the sea, still bears the marks of French occupation.

The Godavari is a useful waterway and there is a lot of boat traffic on it. Logs are floated down the river to distant places instead of being taken by road or in boats. The banks of the Godavari are rich with teak and bamboo forests.

(From the NBT Publication, The Story of Our Rivers, Part- II)

एक गड़ेरिया था संगीता सेठी



स्पन्दन के पापा उसे रोज ही यह कहानी सुनाते थे। एक गड़ेरिया था। वह रोज जंगल में बकरियां चराने जाता था। एक दिन उसको शरारत सूझी। वह पेड़ पर चढ़ गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। शेर आया, शेर आया। गांव वाले भागे-भागे गए। देखा तो शेर आया ही नहीं था। गांव वाले अपने घरों में लौट गए। एक दिन फिर गड़ेरिया को शरारत सूझी। वह पेड़ पर चढ़ गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। गांव वाले फिर भागे-भागे गए।

देखा तो कोई शेर नहीं आया था। गांव वाले इस बार बेहद गुस्सा हुए। गड़ेरिया को बुरा भला कहा और अपने घरों को लौट गए। “गड़ेरिया मुस्कुराने लगा।” स्पन्दन अपनी तुतलाती भाषा में बचा हुआ पूरा वाक्य पूरा करता। वह साल ही अपने पूरे दूधिया दांत दिखाकर हंसता। पापा आगे की कहानी और भी रूचिकर तरीके से सुनाते।

कुछ दिन बाद सचमुच में शेर आ गया। गुर्रह ! गुर्रह ! उसके पापा बीच-बीच में शेर की आवाज भी निकालते। डर के मारे गड़ेरिया पेड़ पर चढ़ गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। स्पन्दन के चेहरे के भाव उसके

पापा की चेहरे के भावों के साथ बदलते रहते। शेर आया, शेर आया ! पर इस बार गांव वाले आए ही नहीं। शेर सारी बकरियों को खा गया। गड़ेरिये को भी खा गया। जब शाम को बकरियां घर नहीं लौटी तो गांव वालों को चिंता हुई। वो जंगल की तरफ भागे तो देखा सारी बकरियां मरी हुई थी। गड़ेरिया भी मरा हुआ था। गांववालों को दुख हुआ।

“इसलिए झूठ” पापा वाक्य को आधा छोड़ देते।

“नहीं बोलना चाहिए!” और स्पन्दन अपना वाक्य पूरा करता।

“कहानी खत्म” पापा अपनी कहानी अभियान की समाप्ति का नारा लगाते।

“पैसा हजम” नन्हा स्पन्दन सुर में सुर मिलाता।

पर कहानी खत्म कहां हुई थी। जब तब उसके पापा कहानी की किताबों में उसे गड़ेरिए के फोटो दिखाते रहते। कभी टी.वी. पर किसी दृश्य में बकरियों के पीछे लकड़ी लिए चलते व्यक्ति को दिखाते। स्पन्दन गड़ेरिए की कहानी मन में बसा चुका था।

स्पन्दन प्ले स्कूल में जाने लगा था। उसके पापा रोज उसे मोटर साइकिल पर स्कूल छोड़ने जाते। स्कूल में वह कुछ और नई कहानियां सुन चुका था। पर अपनी पहली गड़ेरिए वाली कहानी नहीं भूला था।

एक दिन स्कूल से थोड़ा ही पहले स्पन्दन के पापा को बकरियों का झुंड दिखाई दिया। उसी के पीछे लकड़ी को कंधे पर टिकाए धोती और सिर पर मटमैला साफा पहने एक व्यक्ति चल रहा था। स्पन्दन के पापा ने उसे साक्षात् ही दिखा दिया। “देखो! वो रहा गड़ेरिया!”

“और ये रही उसकी बकरियां” स्पन्दन ने हमेशा की तरह वाक्य पूरा किया। स्पन्दन के इस अंदाज पर उसके पापा की हंसी निकल गई। पापा अपनी बात को आगे बढ़ाने के लिए बोलते जा रहे थे— “देखो ये होता है असली गड़ेरिया। यही बकरियां चराने जंगल में जाता है। जब शाम हो जाती है तो सारी बकरियां को वापिस घर ले आता है। ये जो कंधे पर लकड़ी है ना ये इसके बहुत काम आती है बकरियों को हांकने में और जंगल में जानवरों से रक्षा में।”

स्पन्दन पापा की बात बहुत ध्यान से सुन रहा था। अचानक चिल्ला कर बोला— “देखो! देखो! पापा वो गड़ेरिए के हाथ पर क्या बंधा हुआ है?” पर उनकी नजर अभी तक उसके पट्टी बंधे हाथ पर गई नहीं थी। उन्होंने पलट कर देखा।

“पट्टा” पापा ने जवाब दिया।

“क्यों बंधा है पट्टा?” स्पन्दन ने झट से अपना अगला प्रश्न रख दिया।

“उसको चोट लग गई” पापा ने सहजता से जवाब दिया।

“क्या उसने भी झूठ बोला था? क्या गांव वाले भागे-भागे नहीं गए थे? क्या जंगल में शेर इसकी बकरियों को नहीं खा पाया था? क्या इसको ही शेर ने खाया था? क्या इसीलिए इसको चोट लगी है? क्या इसीलिए झूठ नहीं बोलना चाहिए?” स्पन्दन की प्रश्नों की झड़ी से पापा हैरान रह गए।

नन्हे स्पन्दन के मन में गड़ेरिया इस कदर बसा है पापा को इसका अंदाजा नहीं था। पापा मोटर साइकिल पर आगे बैठे स्पन्दन का चेहरा तो नहीं देख पा रहे थे पर उसके दिल में उमड़ते भावों को साफ महसूस कर रहे थे। उनका मन हुआ कि स्पन्दन का चेहरा चूम ले। स्पन्दन का स्कूल आ गया था। पापा ने उसे मोटर साइकिल से नीचे उतारा। उसे बैग पकड़ाया और बाय करने रवाना हो गए। पापा के मन में बहुत गहराई से चल रहा था— “एक गड़ेरिया”।

Petra- The Wonderful

Radha Kant Bharati



A young Swiss explorer, John Ludwig Burckhardt, was making his way across the Biblical lands of Jordan in 1812 as an Arab merchant. As he came to the mountainous hills of ancient Edom, he became fascinated by Bedouin stories of a mysterious ancient city buried in the heart of a mountain.

The young man could not openly declare his desire to visit this place, since this would have blown his cover. So he announced that he wished to make a sacrifice at the tomb of Aaron, which he had heard overlooked the ruined city. Following his guide along a dry water course which led through a long

narrow gorge in the mountainside, Burckhardt was amazed to come upon a wealth of temples and tombs cut into the living rock.

Burckhardt had rediscovered the ancient city of Petra, the location of which had passed from the western memory for nearly a thousand years. Apart from its scientific interest, the rediscovery of Petra, like the earlier unearthing of Pompeii, made a deep impression on the romantic sensibility of the times.

Petra's visual situation and mixture of architectural influences (Mesopotamian, Egyptian, Hellenistic

and Roman) make Petra quite unlike any other ancient city. But like most splendid cities, Petra's rise depended on trade. Today, Petra's location, tucked away in a cliff-surrounded mountain basin, seems eccentric. In fact, the city lay at the crossroads of some of the most important overland trade routes of the ancient Middle East. Only at Petra was there a convenient route through the high mountain ridges over which the trans-Arabian caravans had to pass to reach the Red Sea and Mediterranean. Added to this, Petra had the advantage of an abundant water supply, in a dry region.

The ancient Nabateans saw the possibilities of the Petra site and, by about 300 BC they started to carve out a city here. Soon, Petra became a great trading center and the capital of a powerful Nabatean Kingdom, which lasted until AD 106 when Petra was conquered by the Romans. As a Roman province, Petra's importance continued for some time, and its architecture was strongly influenced by Roman styles. But its commercial activities gradually dwindled as the Romans developed alternative trade routes. By the middle of the six century the city seems to have been deserted. In final disaster, Petra was hit by an earthquake, probably in the middle of the eighth century.

Almost nothing remains of the free-standing building which once occupied

the centre of Petra. But the many tombs and temples which were cut into the surrounding cliff faces survive almost intact. The most famous and most beautiful of these is the Khasneh, which stands opposite the inner end of the Siq, the narrow gorge leading to Petra.

Most probably built in the first century BC, the Khasneh has a two-storied façade. The lower storey is like a temple entrance, with columns crowned by a triangular pediment. The central part is recessed, leaving 'broken' pediments on their side; in the recess is a round pavilion or kiosk. Sculptured decoration completed the monument. Inside the Khasneh is a central sanctuary 12.2 square metres, flanked by two smaller rooms, presumably for the residence priests.

The Khasneh was certainly a temple and may also have been a tomb. Its Arabic name, meaning Treasure, came from the Bedouin belief that the sculpted urn on top of the central pavilion contained the treasure of a wealthy Egyptian pharaoh.

The local Bedouin used to fire at the urn with their guns in the hope of breaking it open and being showered with treasure. The real treasure of Petra is, however, the remains of the city itself.

56, Nagin Lake, Peeragarhi, Delhi

क्या मैंने सही किया?

सुरेखा पाण्डीकर



“मां जल्दी करो। देर हो रही है!” बस एक मिनट जयू! पूजा का प्रसाद ला रहीं हूं। खाकर जाना तेरा इंटरव्यू ठीक होगा और तुझे स्कॉलरशिप जरूर मिलेगी। मां ने प्रसाद लाते हुए कहा। “हां हां दे दो प्रसाद, बड़ी डाक्टरनी या अफसर बनेगी न छोरी।” जयू की दादी ने हमेशा की तरह ताना दिया।

“बनेगी ही! क्यों नहीं! जा जयू मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है संभल कर जाना।”

“मां मुझे भी प्रसाद दे दो, दीदी से पहले” विजय यानी पप्पू आकर बोला।

“हां देती हूं। पहले दीदी को देना है, उसे देर हो रही है।” मां ने कहा।

“नहीं, पहले मुझे।” पप्पू ने जिद्द की।

“अरे दे दे न बहू। बच्चा है। छोटा है मेरा विजय बेटा।” दादी ने अधिकार जताया।

“मां जाने दो, दे दो उसे पहले पर जल्दी करो।” जयू ने कहा।

मां ने यह कहकर विजय के हाथ में प्रसाद दिया और फिर जयू को दिया।

जयू ने मां को प्रणाम किया। “दादी को भी प्रणाम करो।” मां ने कहा।

बेमन से जयू ने दादी को प्रणाम किया। दादी ने मुंह फेर लिया।

“देखो मां!” जयू बोली।

“जाने दे बेटा। भगवान तेरे साथ है। चल अब। सारी चीजें ले ली न।” मां दरवाजे तक छोड़ने आई।

“मां, पिताजी” जयू ने पूछा।

“तुझे पता है वह अपनी मां के कहने पर चलते हैं। तेरा पढ़ना आदि उन्हें पसंद नहीं।” मां ने कहा।

“मुझे पर जो अन्याय हुआ वह तेरे साथ नहीं होने दूंगी। चल जल्दी अब।” मां ने भावुकता से कहा।

मां ने जयू को प्यार कर से कहा— “यह कुछ रुपये रख।” “देर हुई तो कुछ खा लेना और रिक्शे से आना-जाना।” मां ने उसकी मुट्टी में पचास के दो नोट थमा दिए।

जयू जानती थी कि मां किस तरह खुद काम करके पैसे बचाती थी जयू की पढ़ाई और संगीत की क्लास के लिए। सब के ताने सहती थी। दादी और दादाजी तो उनके मायके यानी जयू के नानाजी को भी ताने देते थे। मां चुपचाप सहती थी। पर जयू की शिक्षा और संगीत पर आंच न आने देती थी।

जयू ने सोचा, “अभी समय है पैदल जाऊं तो भी 15-20 मिनट पहले ही पहुंच जाऊंगी। रिक्शा के पैसे बचेंगे। तो मां के

लिए फूलों का गजरा खरीदूंगी। मां को फूल बहुत अच्छे लगते हैं। मां का जुड़ा भी बड़ा सा है। और चोटी करती है तो कमर से नीचे तक जाती है। सुंदर लगेगा उनकी जुड़े पर गजरा। सोचते-सोचते जयू मार्केट से गुजर रही थी। जयू ने देखा की एक प्यारा बच्चा एक औरत के साथ जा रहा था। और तभी उस औरत ने उसे धक्का दिया और आती हुई गाड़ी से वह टकरा गया। गाड़ी वाले ने जोड़ से ब्रेक लगाई, “अरे! बच्चा मरा, बच्चा मर गया” की आवाज आई।

भीड़ जमा होने लगी पर कोई आगे आकर बच्चे को नहीं उठा रहा था। जयू ने बच्चे को उठा लिया, काफी खून बह रहा था। उसने एक ऑटो वाले को रोका। भला मानस रुक गया। “जल्दी, पास के देशपांडे अस्पताल चलो और आपके पैसे देती हूं।” कहकर जयू बच्चे को लेकर इमरजेंसी वार्ड में गई।

“सिस्टर यहां डॉ. जयंती है न उनको बुलाइए। जल्दी प्लीज, मेरी मौसी है वह। बच्चे का इलाज जल्दी होना चाहिए।” डॉ. जयंती का नाम सुनते ही सब एकदम चौंक गए और ट्रॉली लाकर बच्चे को ऑपरेशन रूम में ले गए। नर्स ने फोन किया। डॉ. जयंती आई।

“अरे जयू तू! सब ठीक है ना? क्यों आई है?” डॉ. जयंती ने पूछा।

“मौसी उस बच्चे को बचाइए गाड़ी के नीचे आ गया था। बाद में सब बताऊंगी।” डॉ. जयंती ने देखा जयू कांप रही थी। “नर्स कॉफी देना। मैं अंदर जा रही हूं।” डॉ. जयंती ने नर्स से कहा। नर्स ने जयू को कुर्सी पर बिठाया। पहले पानी दिया, फिर कॉफी। दस मिनट में डॉ. जयंती आई।

“काफी खून बहा है। एक दो चोटें गंभीर है, पर हड्डियां नहीं टूटी। चमत्कार है।” डॉ. जयंती ने बताया।

“मौसी खून देना पड़ेगा ना? तो मेरा खून देख लीजिए। मैच हो तो ले लीजिए, पर बच्चा बचना चाहिए।” जयू ने कहा।

“तुम जानती हो यह किसका बच्चा है?” डॉ. जयंती ने पूछा।

“नहीं! पर उसके साथ एक औरत थी जिसने उसे गाड़ी के सामने धक्का दिया और भीड़ का फायदा उठाकर भाग गई। भगवान करे मेरा ब्लड ग्रुप सही हो।” जयू बोली।

भगवान ने उसकी सुन ली। ब्लड ग्रुप मैच हो गया। जयू का खून बच्चे को दिया गया।

“जयू थोड़ा आराम करो। घर जाने की जल्दी मत करो।” डॉ. जयंती बोलीं।

“और खून चाहिए तो दुबारा ले लो, मौसी।” जयू बोली।

“नहीं! नहीं!, अब जरूरत नहीं पड़ेगी। उसके घरवालों की तलाश हो रही है।” डॉ. जयंती ने कहा।



“पर तुम इस समय वहां कैसे पहुंची।”
डॉ. जयंती ने पूछा।

जयू चुप रही। वह जानती थी कि डॉ. जयंती को उनके घर के बारे में सब पता है। वह मां की पक्की सहेली है। बारहवीं तक दोनों साथ पढ़ी थीं। मां जयंती मौसी से पढ़ाई में अच्छी थी। पर बारहवीं के रिजल्ट से पहले मां की शादी कर दी गई।

उस समय ससुराल वालों ने यानि जयू के दादा-दादी और पिताजी ने उनको आगे पढ़ाने का वादा किया था। पर निभाया नहीं। इतना ही नहीं नाना-नानी के पास कभी जाने नहीं देते थे। सारा समय कोल्हू के बैल की तरह घर के काम में लगाए रहते थे। पर जयंती मौसी आगे पढ़कर डॉक्टर बनी। उनके पति, ससूर और सास सब डॉक्टर थे और उनका ही अस्पताल था।

डॉक्टर बनने के बाद भी जयंती जयू की मां प्रमिला से मिलती थी। जयू का नाम भी मां ने अपनी सहेली जयंती के नाम पर रखा था। और चाहती थी, कि जयू भी पढ़े और आगे बढ़े। इसलिए वह जयू को प्रोत्साहन देती थी और ससुराल में गालियां खाती थीं।

“बोलो न जयू। चुप क्यों हो।” डॉ. जयंती ने पूछा।

“बाद में बताऊंगी। मैं जाती हूं अभी घर में मां परेशान हो रही होगी।” जयू ने कहा।

“ठीक है थोड़ी देर रूको मैं गाड़ी सें छुड़वा देती हूं।” डॉ. जयंती ने कहा।

“नहीं, नहीं मौसी! आप जानती हो आपकी गाड़ी में जाऊंगी तो दादा-दादी मां को और तंग करेंगे।” जयू ने अपनी मजबूरी बताई।

“मैं ऑटो में जाऊंगी, मां ने पैसे दिए हैं मुझे।” जयू ने कहा।

“संभल कर जाना। बच्चे के ठीक होने पर तुझे खबर दूंगी।” डॉ. जयंती ने कहा।

जयू अस्पताल से बाहर आ गई। पास के पार्क में बेंच पर बैठ गई। और दोनों हाथों में मुंह छुपाकर सोचने लगीं। “यह मैंने सही किया कि नहीं? घर किस मुंह से जाऊं? मां को क्या बताऊं? स्कॉलरशिप तो गई। यह क्या हो गया?”

“मैंने ठीक किया या गलत? आगे क्या करूं मैं?”

(अब पाठकों आप बताइए, जयू ने सही किया या गलत? उसे क्या करना चाहिए? क्या होगा आगे? इन सवालों का उत्तर देकर कहानी पूरी करें।)

उब्ल्यू-2, ग्रीन पार्क मार्केट
के पीछे, नई दिल्ली- 110016

My Visit To Nainital

Shikhar Bhatnagar



We reached there around 3 o'clock in the afternoon by a Deluxe Bus.

From the Bus stop, we directly went to our hotel at Mall Road, where we freshened up, took light refreshment and started to go out. I was very excited about sailing on boat in the beautiful Naini lake and also about the Horse-Riding. I told my father about this

During the last ten years I have visited almost every hill station of north India but my last visit to Nainital had been very eventful and I have time and again told about this journey to my friends and relatives. Now I want to share this story with all of you.

During the summer vacations of my school when I was in class sixth, I visited Nainital with my family comprising my father, mother and two elder brothers.

but my mother and the brothers had some other plans. My brothers wanted to shop and my mother wanted to go to a temple nearby.

Being the youngest, my father acceded to my wishes.

We started for the Boat Club where we hired a boat. The boatmen gave us Life Jackets which we wore over our shirts. After that the boatmen started to row the boat. Telling us about the lake

and the beautiful Nainital, he took us upto the middle of the lake. On our way, we saw so many ducks. These ducks looked very beautiful. I tried to touch them but they swam past very quickly. I enjoyed the boating in the lake very much.

After that I alongwith my brothers went for the horse- riding. Riding on a horse was a great experience. Now a days, horse riding is prohibited around the lake.

With my both the wishes having been fulfilled, I felt very happy and satisfied. The weather was getting bad and it was getting to be dark soon. So my father decided to take us back to the hotel.

In the hotel, we took dinner early and retired for the day to be active and fresh for the next day's outings.

In the morning, we got up early and planned to go to "Tiffin Top" which is a very high and steep hill on the outskirts of Nainital. Though horses are also available, we decided to go on foot as we all wanted to explore the hills.

After climbing up the hill, I became so excited that I began to walk ahead of everyone. Though my parents repeatedly told me to walk along with them, I walked very fast and left my brothers far behind. Moving ahead faster and faster when I negotiated a circular hill, I saw a group of four men and a woman standing there. They were wearing their traditional dress of Pyjama and Kurta and Shawls. The men had bundles of dry

wood on their heads and the woman, a small child in her lap.

Lost in my own world when I tried to get past this group of people, a man among them caught hold of me and made me smell something and wrapped a shawl around my body. Now I was also looking as one of them. Under the spell of that smell, I started to walk along with them silently.

Having not been able to see me and fearing that I might have been lost, my family members got panicky. My mother started crying, and my father started running up the hill shouting at the top of his voice.

He was shouting so loudly that when he went past me, his voice resonated into my ears and suddenly I came back to my senses. My name rung a bell in my head and I understood the situation I was in.

I instantly freed my hand from that man's grip and ran towards my father shouting – Papa – Papa .Listening my voice he immediately turned around and looked at me. He understood what these people were upto. He came running to me, pushed a man away and took hold of me.

The kidnappers understood that their plan to kidnap me had failed. They threw their woods and ran away in the jungle. I was saved.

We did not want to follow them as my father did not want to pursue the



matter further. Seeing me hale and hearty, my mother and brothers hugged me, ruffled my hair and kissed me like never before.

From the next day onwards, we tried to cover the rest of the sight seeing spots quickly as we were left with only two days before my school was to reopen after vacations. We went to “Snow View, located atop the Sher-ka-danda Ridge which is easily accessible by cable car.

On a clear day, it offers spectacular views of the snowbound mighty Himalaya, including Nanda Devi, Trisul, and Nanda Kot. The best time of the year for a clear view of the mountains is late October and November.

*Trinity Institute of Professional Studies
Sector- 9, Dwarka, New Delhi- 110075*

Golden Tree

Prerna Sood



Once upon a time, there lived a sage and his wife. The wife was a very passionate woman whereas her husband was a kind and noble sage who was very much satisfied with whatever he had.

The king of the kingdom was a very kind person. One day, on his birthday, he decided to give donations to the poor.

When the sage's wife heard about this, she told her husband to go and take money from the king. Obeying his wife, unwillingly, he went to the king to receive some money. When the sage's turn came to receive the donation, the king took out a bag of gold coins and tried to give it to the sage who refused. He told the king that he would only accept the king's hard-earned money. The king being a good human, told the sage to wait for some time.

The king disguised himself into a common man and went to a blacksmith

to ask for a job. The blacksmith told him to heat the iron bars and hammer them. The blacksmith told him that he would give him ten copper coins for one day's work. The king tried to do as the blacksmith had told him but as it was for the first time that he was doing such a job, could not do the work properly. But still the blacksmith gave him five copper coins for half a day's work. Then the king went to

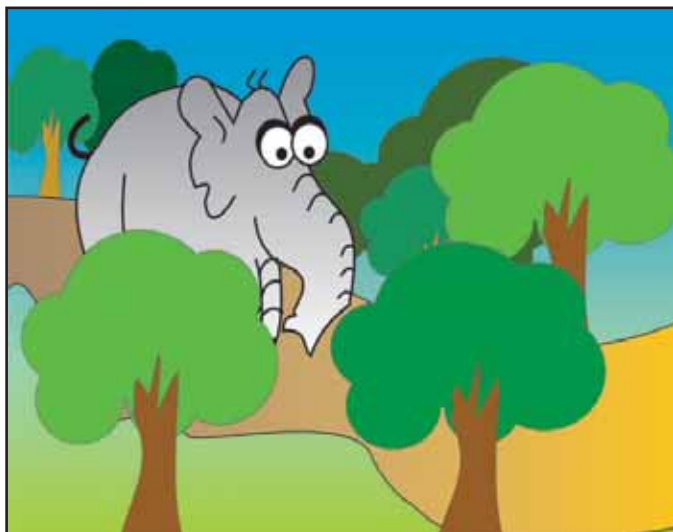
the sage and gave him the five copper coins which he had earned. The sage accepted the coins and went to his wife and gave her the donation which he had received from the king. On seeing the five copper coins, she threw the coins out of the house in her garden. The sage went away to sleep.

Next morning, when they got up his wife gave a loud cry. He went to her and got the shock of his life. As he looked out of the window, he saw a golden tree. They went outside and the sage realized that the place where his wife had thrown the copper coins the previous day, had grown a golden tree. On being asked by his wife, he told her that the money earned through hard work is no less valuable than gold and silver.

*Auckland House School
Jadavpur, Kolkata (W.B.)*

Greatness of the Great

Prabir Kumar Pal



An elephant was out for a wedding treat. He was passing through a forest.

On the way he trod on a baby ant who was playing beneath a brick. The ant became senseless.

Soon other ants came to know about this accident. They rushed to the spot. Then a multitude of other ants united together. They blocked the path through which the elephant would return.

The elephant on his return from the wedding stopped on seeing the ant-hill. Now the ants complained in one voice, “Why have you trampled over one of our children? You big animals neglect us for being tiny, it seems?”

The elephant replied very humbly, “God has created us in many ways. You have no eyes. Again, he gave me very small eyes. I cannot see small things which happen to be near my feet. I am very sorry to hurt my friend.”

So saying the elephant went near the wounded ant. He bent down. He fanned the ant with his big ears. The ant got back to senses. Then he put the ant on his back using his

trunk. He swore to carry it to its home.

Since then we always see an ant on the back of an elephant.



*Purbagopalpur Primary School
P.O.- Bhadrapur, P.S.- Nalhati
Birbhum (W.B.)*

लौट के बुद्धू घर को आए

भगवत प्रसाद पान्डेय



का बेटा टिल्लू भी शादी करने लायक हो गया। उसकी जंगल में ही किताबों की दुकान थी।

टिल्लू के घरवालों ने कई जगह रिश्ते की बात की लेकिन कहीं भी शादी तय नहीं हो पा रही थी। बहुत तलाश के बाद सुंदरवन में श्यामू बंदर की बेटी लज्जो से उसका रिश्ता पक्का कर दिया गया।

विवाह की तारीख तय करने के बाद दोनों ओर से तैयारियां शुरू हो गयीं। निमंत्रण पत्र छपवाये गये।

शादियों के मौसम में हरियलवन में भी खूब बारातें आ-जा रहीं थीं। रामू बंदर

बारातियों के लिए खाने-पीने से लेकर रहने तक का इंतजाम किया जाने लगा।

‘भालू बैण्ड कम्पनी’ से बैण्ड की बात भी हो गयी।

धीरे-धीरे वह शुभ घड़ी आ गयी, जिसका सभी को इंतजार था। टिल्लू की बारात दुल्हन के घर की ओर चली। बैण्ड वाले नई फिल्मों के गाने ज्यादा बजा रहे थे, जिनकी प्यारी-प्यारी धुनों पर जानवरों के पांव थिरकने लगे। मोर के तुमके देखने लायक थे। टिल्लू के माथे पर मुकुट और चेहरे पर सेहरा बंधा था। हिनहिन घोड़ी की पीठ पर सवार होकर वह दूल्हा बन कर बड़ा खुश था। गज्जू हाथी बीच-बीच में आतिशबाजी छोड़ रहा था।

बारात के सुंदरवन पहुंचते ही बारातियों का खूब आदर-सत्कार हुआ। इसके बाद पंडित लंगूर चंद ने शादी की रस्में पूरी करवाने के लिए टिल्लू को मंडप में बुलाया। टिल्लू ने अपने दोस्तों से यह संदेश भिजवाया कि जब तक उसे दहेज में एक टीवी और स्कूटी नहीं मिलेगी तब तक वह मंडप में नहीं आयेगा।

दुल्हन का पिता श्यामू बहुत गरीब था। वह टिल्लू की मांग पूरी करने में असमर्थ था। कुछ बड़े-बूढ़े जानवरों ने टिल्लू को समझाया कि शादी में दहेज की मांग करना अच्छी बात नहीं है। जंगल के कानून में भी दहेज लेना अपराध है। टिल्लू को इस बात

से कोई मतलब नहीं था। वह अपनी जिद पर अड़ा रहा।

अपनी सहेलियों के द्वारा यह बात लज्जो तक भी पहुंच गई लेकिन उसने धैर्य नहीं खोया। वह अपने पिता के पास जाकर बोली, “पिताजी, मैं इस दहेज-लोभी से बिल्कुल शादी नहीं करूंगी। मैं नहीं चाहती कि मेरी शादी में दहेज देकर इस घर में और गरीबी आए।”

पुत्री की बात सुनकर श्यामू की हिम्मत बढ़ी। उसने भी पक्का निर्णय लेते हुए बारातियों को बता दिया, “मैं टिल्लू की मांग पूरी नहीं कर सकता हूं और मेरी बेटी भी ऐसे लोभी से शादी करने को तैयार नहीं है। आप बारात ले जा सकते हैं।”

श्यामू की बात सुनते ही बारातियों में हड़कंप मच गया और टिल्लू का मुंह लटक गया। बिना वधू के ही बारात वापस लौट गई। टिल्लू जो कि टीवी और स्कूटी के सपने देख रहा था, उसे बिना बीबी के ही घर वापस लौटना पड़ा। दूसरे दिन ‘जंगल टाइम्स’ में जब यह खबर छपी तो सभी ने लज्जो के साहस की तारीफ की।

*जिलाधिकारी कार्यालय
चम्पावत (उत्तराखंड)*

मोनू का बुखार छूमंतर

सलसबील बनो



आज सुबह मोनू को देर तक सोते देखकर माँ ने आवाज लगाई “मोनू, जल्दी उठो और स्कूल के लिए तैयार हो जाओ।” जब मोनू की कोई आवाज नहीं आई तो वह बुदबुदाई “आज काफी देर तक सो रहा है।”

माँ की आवाज से मोनू की नींद टूट चुकी थी। पर वह बिस्तर से उठ नहीं पा रहा था। उसके बदन में काफी दर्द हो रहा था, कमजोरी लग रही थी और चक्कर भी आ रहे थे। फिर भी वह किसी तरह माँ के पास गया और बोला “माँ मेरे सर और बदन में बहुत तेज दर्द हो रहा है और चक्कर भी आ रहे हैं।”

माँ ने मोनू के माथे को छूआ और कहा—अरे तुझे तो तेज बुखार है। चलो, तुम्हें डॉक्टर से दिखा लाऊँ। ” माँ मोनू को लेकर जल्दी से डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने मोनू की कुछ जरूरी जाँच की और पूछा “तुम्हें खाने—पीने में क्या पसंद है?”

मोनू झट से बोला “पिज्जा, बर्गर, चाऊमीन, चाट, मैगी, आईसक्रीम और कोल्ड ड्रिंक्स।” फिर माँ ने कहा “यह रोटी, सब्जी, चावल,

दूध, दाल आदि खाना—पीना नहीं चाहता है। मैं तो समझा—समझा कर थक गई हूँ।”

डॉक्टर ने मोनू को देखा, वह सामान्य से थोड़ा अधिक मोटा भी था। डॉक्टर ने उसका ब्लड प्रेशर मापा। वह भी बढ़ा हुआ था। तब उन्होंने मोनू से कहा “ तुम्हें रोटी, सब्जी, चावल, दाल और दूध ही खाने—पीने चाहिए। ये सब पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं, जो शरीर को स्वस्थ रखते हैं।”

मोनू को डॉक्टर ने कहा “पिज्जा, बर्गर, चाट वगैरह जैसे फास्ट फूड आहार में पौष्टिक तत्वों की कमी रहती है। ये जंक फूड कहे जाते हैं। इनके सेवन से पौष्टिक तत्व शरीर को नहीं मिल पाता है, जिससे शरीर कमजोर हो जाता है।”

फिर डॉक्टर मोनू की माँ से मुखातिब हुए और कहा, “ये जंक फूड बच्चों में मोटापा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और दिल के रोग का खतरा बढ़ाने के लिए जिम्मेवार होते हैं। अपने बच्चे को खाने—पीने की इन चीजों से बचाइए और घर का बना खाना ही दीजिए। नाश्ता और खाना के अलावा मौसम में मिलने वाले फल भी अवश्य दें।”

माँ ने डॉक्टर को नमस्ते कहा और मोनू को लेकर घर के लिए चली। रास्ते में माँ ने जरूरी दवाईयाँ खरीदी। घर आकर माँ ने मोनू को दवा खिलाई।

मोनू बिस्तर पर लेट कर दादी से बातें करने लगा। दादी ने मोनू से कहा “तेरी यह हालत देख कर मुझे बड़ी चिंता हो रही है।

तेरी परीक्षा भी शुरू होने में कुछ ही दिन रह गए हैं।”

मोनू दादी से बात करते-करते सो गया। और सपना देखने लगा कि दादी ने रेहड़ी वाले से हरी सब्जियाँ खरीदी और मोनू से बोली “ तुझे अब दाल, चावल, और हरी सब्जियाँ ही खाना होगा क्योंकि उसे खाकर ही तू स्वस्थ रहेगा।” फिर मोनू ने देखा, वह थैली में रखी सब्जियों से खेल रहा है। और बातें भी कर रहा है।

सब्जियों ने कहा “ मोनू, तुम हमें क्यों नहीं खाते? हम सब पौष्टिकता से भरपूर हैं। हमें खाओगे तो तुम्हारा बुखार छूमंतर हो जाएगा।” तभी लाल टमाटर मोनू के पैर के पास लुढ़ककर आ गया और बोला “मेरे अंदर आयरन है, कैल्शियम है, फॉस्फोरस है और विटामिन—ए भी है। मुझे खाओगे तो तुम्हारा खून साफ रखूंगा, पाचन—क्रिया भी ठीक रखूंगा, लीवर और आँखें भी स्वस्थ रखूंगा।” पालक से भी रहा नहीं गया। वह भी उड़कर मोनू की गोद में आ गया और बोला “मैं भी पौष्टिकता से भरपूर हूँ। मेरे अंदर भी आयरन है, सल्फर है, विटामिन—ए है, और क्लोरोफिल भी है। मैं शरीर में खून बनाता हूँ और शरीर को नुकसान पहुँचाने वाले बैक्टीरिया को शरीर से बाहर निकाल देता हूँ जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।”

गाजर ने भी लंबी छलांग मारी और मोनू के पास आ गया और बोला “मेरे अंदर भी—पौष्टिकता समाई हुई है। बताऊँ, मेरे अंदर सोडियम है, सल्फर है, विटामिन—ए और कैल्शियम भी है। मुझे खाओगे तो तुम्हारी आँखें स्वस्थ रहेंगी। तुम्हारी त्वचा की कोमलता

भी बनी रहेगी। दांत और मसूड़े भी स्वस्थ रहेंगे। मैं भी खून साफ करता हूँ और पाचन शक्ति भी ठीक रखता हूँ।



खीरा, चुकंदर, मूली, गोभी, सलाद, सबने शोर मचाना शुरू कर दिया— “हमें भी खाओ, हमें भी खाओ, हम सब भी पौष्टिकता से भरपूर हैं।” सब्जियों की बातें सुनकर मोनू ने कहा “मुझे तुम सब की बातें समझ में आ गईं। मैं स्वस्थ रहने के लिए सब्जियाँ खाऊँगा।”

माँ मोनू के सर पर हाथ रखकर उसका बुखार देख रही थी। तभी मोनू की नींद खुल गई। उसने माँ से कहा “माँ, आज से मुझे खाने में सब्जियाँ जरूर देना।”

यह सुनकर माँ मोनू को हैरानी से देखने लगी, और सोचने लगी, यह तो सब्जी का नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ता था। और अभी यह सब्जी खाने की बात कर रहा है।

मोनू ने माँ से फिर से कहा “माँ, मैं भी स्वस्थ रहना चाहता हूँ। जब मैं रोज खाने में सब्जी खाऊँगा तो बीमार नहीं होऊँगा।”

माँ खुश होकर रसोई में चली गई और मोनू के लिए सब्जी का सूप बनाकर ले आई। मोनू सूप पीने लगा और सोंचने लगा, अब मेरा बुखार जल्दी छूमंतर हो जाएगा।

सी/ओ करीम हुसैन, 1068/1, वार्ड नं.— 1
नियर कुतब साहेब पार्क, कुतब हाऊस, फर्स्ट फ्लोर
मेहरौली, नई दिल्ली— 110030

ओलंपिक

डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा

पक्षियों का ओलंपिक



इस बार पक्षियों का विशाल आयोजित होगा ओलंपिक साधन तो काम न आएंगे सुविधाएं होंगी अधिक-अधिक

कुछ खेल चलेंगे सरिताओं झीलों-तालाबों के जल में कुछ खेल चलेंगे आसमान बादल-हरियाले भूतल में

सब पक्षी खेलों का नवीन इतिहास रचेंगे सार्वजनिक इन पक्षियों का विशाल आयोजित होगा ओलंपिक

दुनियाभर के पक्षी अपना सर्वोच्च कमाल दिखाएंगे फिर चार वर्ष बाद पुनः ऐसा ही अवसर पाएंगे

उत्साह, उमंग और कौशल होगा अत्यंत चमत्कारिक इन पक्षियों का विशाल आयोजित होगा ओलंपिक।

बाज बोला

मैं क्रिकेट का खेल देखने ओलंपिक में जाऊंगा गेंद झपटने का अनहोना करतब एक दिखाऊंगा



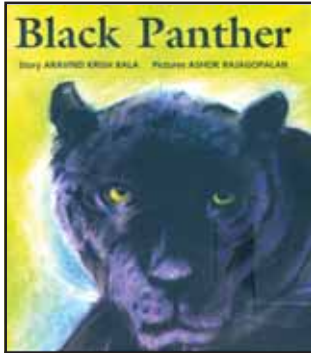
तेज़ गेंद को पकड़ फील्ड में फिर ऊंचा उड़ जाऊंगा ऊपर से वह गेंद फेंककर नया विकेट उड़ाऊंगा।

पो. गिलुंड (राजस्थान)

Book Review

Black Panther

Arvind Krish Bala and his friend, Natarajan, an Irula tribesman, were perched on a treetop at a waterhole in the Parambikulam reserve forest in



Kerala. They were waiting to sight a tiger. That was when Natarajan told him the story of his first encounter with a black panther in the Anaimalais, 'elephant hills', in the Western Ghats running through Kerala and Tamil Nadu.

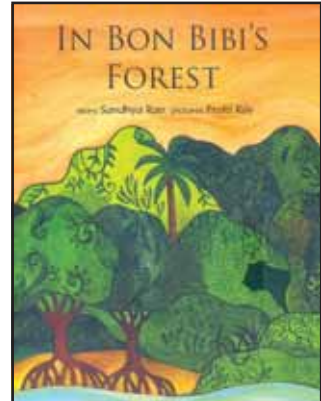
Natarajan had been roaming in the Anaimalais for more than forty years and he knew every bird there, and everything about it. But the one animal he had never seen in all those years was the black panther. "It was my son who first sighted the magnificent black beast," said Natarajan, proudly.

Black Panther tells Natarajan's story through Veera's voice and Ashok Rajagopalan's stunning pastels. Together, they bring to life a silent, secretive, shy creature and create in the reader a sense of curiosity, wonder and not a little fear.

Black Panther
Arvind Krish Bala
Tulika
Rs 150/-

In Bon Bibi's Forest

The quiet villages of Sunderbans are terrorized by a monster with wild eyes, sharp teeth, striped skin and pointed nails –



Dokkhin Rai!

Until finally, Bon Bibi, protector of the forests and people ask him a simple question: Why do you do this?

The answer to this question is central to the age-old theme of human-animal harmony that has inspired many stories, including this one.

Set in a lesser known part of Bengal, the lush and mysterious Sundarban, the textured narrative and dramatic, detailed illustrations evoke the distinct culture of the place – the natural confluence of Hindu and Muslim mythologies, and the rhythm and concerns of everyday life at the edge of a forest.

In Bon Bibi's Forest
Sandhya Rao
Tulika
Rs 135/-

